सोलहवाँ अध्याय

श्रीमैत्रेय उवाच

कथितो भवता वंशो मानवानां महात्मनाम्। कारणं चास्य जगतो विष्णुरेव सनातनः ॥१॥
यत्त्वेतद् भगवानाह प्रह्लादं दैत्यसत्तमम्। ददाह नाग्निर्नास्त्रैश्च क्षुण्णस्तत्याज जीवितम् ॥२॥
जगाम वसुधा क्षोभं यत्राब्धिसलिले स्थिते। पाशैर्बद्धे विचलति विक्षिप्ताङ्गैः समाहता ॥३॥
शैलैराक्रान्तदेहोऽपि न ममार च यः पुरा। त्वया चातीव महात्म्यं कथितं यस्य धीमतः ॥४॥
तस्य प्रभावमतुलं विष्णोर्भक्तिमतो मुने। श्रोतुमिच्छामि यस्यैतच्चरितं दीप्ततेजसः ॥५॥
किन्निमित्तमसौ शस्त्रैर्विक्षिप्तो दितिजैर्मुने। किमर्थं चाब्धिसलिले विक्षिप्तो धर्मतत्परः ॥६॥
आक्रान्तः पर्वतैः कस्माद्दष्टश्चैव महोरगैः। क्षिप्तः किमद्रिशिखरात्किं वा पावकसञ्चये ॥७॥
दिग्दन्तिनां दन्तभूमिं स च कस्मान्निरूपितः। संशोषकोऽनिलश्चास्य प्रयुक्तः किं महासुरैः ॥८॥
कृत्यां च दैत्यगुरवो युयुजुस्तत्र किं मुने। शम्बरश्चापि मायानां सहस्रं किं प्रयुक्तवान् ॥९॥
हालाहलं विषमहो दैत्यसूदैर्महात्मनः। कस्माद्दत्तं विनाशाय यज्जीर्णं तेन धीमता ॥१०॥
एतत्सर्वं महाभाग प्रह्लादस्य महात्मनः। चरितं श्रोतुमिच्छामि महामाहात्म्यसूचकम् ॥११॥
न हि कौतूहलं तत्र यद्दैत्यैर्न हतो हि सः। अनन्यमनसो विष्णौ कः समर्थो निपातने ॥१२॥
तस्मिन्धर्मपरे नित्यं केशवाराधनोद्यते। स्ववंशप्रभवैर्दैत्यैः कृतो द्वेषोऽतिदुष्करः ॥१३॥
धर्मात्मनि महाभागे विष्णुभक्ते विमत्सरे। दैतेयैः प्रहृतं कस्मात्तन्ममाख्यातुमर्हसि ॥१४॥

प्रह्लाद चरित्र विषयक प्रश्न

श्रीमत्रेय महर्षि ने कहा— आपने महात्मा मनु के वंश का वर्णन किया और यह भी आपने बतलाया कि इस जगत् के सनातन कारण भगवान् विष्णु ही हैं ॥१॥ किन्तु आपने यह जो कहा है कि दैत्यश्रेष्ठ प्रह्लाद को न तो अग्नि जला सका और न तो वे अस्त्रों के आघात से अपने प्राणों का परित्याग किये ॥२॥ पाशबद्ध होकर समुद्र के जल में पड़े रहने पर भी अङ्ग सञ्चार करने पर उनके अङ्गों के आघात से पृथिवी हिलने लगी ॥३॥ पत्थरों के द्वारा प्रहार किए जाने पर भी वे मर नहीं सके, आपने जिन बुद्धिमान् (प्रह्लाद जी) का अत्यधिक माहात्म्य बतलाया है॥४॥ उन भगवान् विष्णु की भक्ति से सम्पन्न प्रह्लादजी का चरित मैं सुनना चाहता हूँ। जिन महातेजस्वी का यह चरित है, हे महामुने ! किस कारण से दैत्यों ने उन पर शस्त्रों का प्रहार किया ? उन धर्मात्मा को किस कारण से समुद्र के जल में फेंक दिया गया ?॥५-६॥ किसलिए उनको पर्वतों से दबाया गया ? क्यों उन्हें सर्पों से दंशाया गया ? उनको किसलिए पर्वत से गिराया गया ? अथवा अग्नि में डाला गया ?॥७॥ दिग्गजों ने उन पर अपने दाँतों से क्यों प्रहार किया ? उन पर संशोषक वायु का असुरों द्वारा क्यों प्रयोग किया गया ?॥८॥ दैत्यगुरुओं ने उन पर कृत्या का प्रयोग क्यों किया ? शाम्बरासुर ने अपनी हजारों मायाओं का प्रयोग उन पर क्यों किया ?॥९॥ दैत्य रसोइयों ने उनको मारने के लिए हालाहल नामक विष क्यों दिया ? जिसको वे पचा गये ॥१०॥ हे महाभाग ! प्रह्लादजी के महामाहात्म्य के सूचक इन समस्त चरितों को मैं सुनना चाहता हूँ ॥११॥ मुझको इसके विषय में कोई भी उत्कण्ठा नहीं है कि दैत्य उन्हें नहीं मार सके, क्योंकि जिसका मन एकाग्र रूप से भगवान् विष्णु में लगा हो उसे कौन मार सकता है ?॥१२॥ मुझे इस विषय में आश्चर्य है कि वे धर्मात्मा निरन्तर भगवान् केशव की आराधना में

प्रहरन्ति महात्मानो विपक्षा अपि नेदृशे। गुणैस्समन्विते साधौ किं पुनर्यः स्वपक्षजः ॥१५॥
तदेतत्कथ्यतां सर्वं विस्तरान्मुनिपुङ्गव। दैत्येश्वरस्य चरितं श्रोतुमिच्छाम्यशेषतः ॥१६॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे प्रथमेंऽशे षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

सतरहवाँ अध्याय

श्रीपराशर उवाच

मैत्रेय श्रूयतां सम्यक् चरितं तस्य धीमतः। प्रह्लादस्य सदोदारचरितस्य महात्मनः ॥१॥
दितेः पुत्रो महावीर्यो हिरण्यकशिपुः पुरा। त्रैलोक्यं वशमानिन्ये ब्रह्मणो वरदर्पितः ॥२॥
इन्द्रत्वमकरोद्दैत्यः स चासीत्सविता स्वयम्। वायुरग्निरपां नाथः सोमश्चाभून्महासुरः ॥३॥
धनानामधिपः सोऽभूत्स एवासीत्स्वयं यमः। यज्ञभागानशेषांस्तु स स्वयं बुभुजेऽसुरः ॥४॥
देवाः स्वर्गं परित्यज्य तत्त्रासन्मुनिसत्तम। विचेरुरवनौ सर्वे बिभ्राणा मानुषीं तनुम् ॥५॥
जित्वा त्रिभुवनं सर्वं त्रैलोक्यैश्वर्यदर्पितः। उपगीयमानो गन्धर्वैर्बुभुजे विषयान्प्रियान् ॥६॥
पानासक्तं महात्मानं हिरण्यकशिपुं तदा। उपासाञ्चक्रिरे सर्वे सिद्धगन्धर्वपन्नगाः ॥७॥
अवादयन् जगुश्चान्ये जयशब्दं तथापरे। दैत्यराजस्य पुरतश्चक्रुः सिद्धा मुदान्विताः ॥८॥

लगे रहते थे और उनसे उनके वंश वाले दैत्य इतना दुष्कर द्वेष क्यों किये ?॥१३॥ धर्मात्मा, महाभाग, विष्णुभक्त तथा मत्सर रहित उनको दैत्यों ने इतना दुःख क्यों दिया ? आप इसे मुझे बतलायें ॥१४॥ महात्मागण तो इस प्रकार के गुण से सम्पन्न विपक्षी पर भी प्रहार नहीं करते हैं और जो अपने पक्ष का हो उसके विषय में तो कहना ही क्या है ?॥१५॥ हे मुनिपुङ्गव ! इन सारी बातों को आप विस्तार से बतलायें। मैं दैत्येश्वर प्रह्लादजी का सम्पूर्ण चरित सुनना चाहता हूँ ॥१६॥

इस प्रकार श्रीविष्णुमहापुराण के प्रथम अंश के सोलहवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥१६॥

हिरण्यकशिपु का दिग्विजय और प्रह्लाद चरित

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— हे मैत्रेय ! सदा उदार चरित वाले महात्मा प्रह्लाद का चरित आप अच्छी तरह से सुनें ॥१॥ प्राचीन काल में महापराक्रमी दिति के पुत्र हिरण्यकशिपु ने ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त करने के कारण दृप्त होकर त्रैलोक्य को अपने वश में कर लिया ॥२॥ वह दैत्य स्वयं इन्द्र हो गया तथा स्वयं वह सूर्य, वायु, अग्नि, कुबेर तथा चन्द्रमा बन गया ॥३॥ वह स्वयं कुबेर, यम हो गया तथा यज्ञों के सम्पूर्ण भागों का स्वयं भोग करने लगा ॥४॥ हे मुनिश्रेष्ठ! देवगण स्वर्ग का परित्याग करके, मनुष्य का शरीर धारण करके पृथिवी पर विचरण करने लगे ॥५॥ त्रैलोक्य को जित कर त्रैलोक्य के ऐश्वर्य से दृप्त बना हुआ वह गन्धर्वों द्वारा की जाने वाली स्तुति का श्रवण करते हुए अपने मनोनुकूल विषयों का उपभोग करने लगा ॥६॥ मदपान करके मत्त रहने वाले महाकाय हिरण्यकशिपु की सभी सिद्ध, गन्धर्व तथा सर्पगण उपासना करते थे ॥७॥ सबके सब प्रसन्नता पूर्वक दैत्यराज के आगे कुछ लोग